B.A. III (H.), Geog. (Hon) Paper- VII, Population Geog - Chapter- II, Sources of Pop. Data

भू-पटल पर किसी क्षेत्र या प्रदेश के सर्वांगीण विकास एवं संसाधनों के समुचित उपयोग हेतु जनसंख्या का होना अनिवार्य है। सर्वविदित है कि भू-पटल पर सर्वत्र न तो सारे अनुकूल संसाधन समुचित मात्रा में उपलब्ध है न ही सर्वत्र जनसंख्या का बसाव एक समान है। एक तरफ द०-पू० एशिया घने आबाद क्षेत्र हैं तो आस्ट्रेलिया, विरलतम आबादी वाला। साथ ही अनेक क्षेत्र जन विहीन भी हैं। इनका प्रभाव भी विकासात्मक योजनाओं पर पड़ता है। इसी असमानता का अध्ययन विभिन्न परिप्रेक्ष्यों में जनसंख्या भूगोल में किया जाता है।

जनसंख्या का अध्ययन पूर्णतः गणितीय प्रणाली के तहत किया जाता है जिसमें सभी क्षेत्रों की मानव समूहों को विभिन्न विशेषताओं के साथ गणना की जाती है। यह गणना सिर्फ भूगोल ही नहीं, सांख्यिकी विभाग, जनगणना विभाग एवं कई अन्य सरकारी संस्थाओं द्वारा किया जाता है। इसमें घर घर जाकर गणनाकर्मी जनसंख्या की गणना उसके विभिन्न लक्षणों एवं विशेषताओं के साथ कर आंकड़े एकत्रित करते हैं। पुनः इन आंकड़ों को आवश्यकता अनुसार अलग-अलग स्वरूपों में जैसे लिंग अनुपात, आयु समूह, नगरीय-ग्रामीण आदि में बाँटकर पूर्ण संख्या तथा आनुपातिक संख्या प्रस्तुत करते हैं। यह कार्य काफी जटिल एवं अधिक खर्चीला व समय लगने वाला है।

इन विधियों से एकत्रित आंकड़ों को प्रकाशित व अप्रकाशित अभिलेखों से भी आंकड़े एकत्रित कर व्यक्ति, शोधकर्ता व कई अन्य अपना अपेक्षित कार्य करते हैं जिससे समय, श्रम एवं खर्च की बचत होती है। इस तरह स्पष्ट है कि जनसंख्या से संबन्धित आंकड़े कई विधियों से लिये जा

Scanned with CamScanner

सकते है।

अत: विभिन्न माध्यमों से एकत्रित की गयी सूचनाओं एवं तथ्यों के आधार पर आकड़ो को दो वर्गों में विभाजित किया जाता है जो निम्न प्रकार है :—

1. प्राथमिक आँकड़े एवं
2. द्वितीयक आँकड़े

(1) प्राथमिक आँकड़े :- जो आँकड़े किसी व्यक्ति द्वारा मौलिक रूप से एकत्रित किये जाते हैं उसे प्राथमिक आँकड़े कहे जाते हैं। अर्थात कोई भी व्यक्ति किसी अभिलेख को नकारकर खुद घर-घर जाकर व्यक्ति विशेष से जानकारी हासिल करता है तथा कुल जनसंख्या, स्त्री-पुरुष की संख्या, कार्यशील व्यक्ति की संख्या, प्रवास आदि के आँकड़े खुद एकत्रित करता है वह प्राथमिक आकड़े कहे जाते हैं।

स्रोत :- प्राथमिक आँकड़े एकत्रित करने के निम्नलिखित स्रोत, साधन या विधियाँ है :—

(a) निरीक्षण :- जब कोई गणनाकरने वाले, शोधकर्ता किसी क्षेत्र में जाकर खुद उस क्षेत्र का निरीक्षण करता है तथा वहाँ व्यक्तियों से पूछकर जनसंख्या सम्बन्धी एवं अन्य आंकड़े एकत्रित करता है तो उसे निरीक्षण विधि कहते हैं।

(b) साक्षात्कार :- (Interview) :- जब सर्वेक्षण का क्षेत्र बड़ा होता है तो इस विधि का प्रयोग किया जाता है इस विधि में शोधकर्ता घर-घर नहीं जाकर प्रत्येक गाँव या कस्बा में जाता है और गांव के प्रधान, अन्य प्रमुख व्यक्तियों के यहाँ जाकर उनसे सारे गाँव के जनसंख्या सम्बन्धी व अन्य जानकारी हासिल करता है। इसमें दूसरे व्यक्ति के सहायता की आवश्यकता होती है।

(c) प्रश्नावली विधि :- इसका प्रयोग भी क्षेत्र बड़ा होने पर किया जाता है इसमें भी कुछ दूसरे व्यक्तियों की सहायता लेनी पड़ती है। इस विधि मे शोधकर्ता एक प्रश्नों की सूची बनाकर उसकी प्रतियाँ गाँव-गाँव

में केवल चार जानकार व्यक्तियों को दे देता है। और यह व्यक्ति अपने गांव के प्रत्येक घर का सूची तैयार कर देता है। यह विधि सबसे आसान है।

(ब) नमूना सर्वेक्षण:- आजकल सर्वेक्षण की यह विधि काफी प्रचलित है। इसमें शोधकर्ता क्षेत्र के सभी गांव व घरों का सर्वे नहीं कर प्रत्येक पंचायत ..., मैं से केवल गांव का चयन करता है और उस गांव का सर्वे कर जानकारी एकत्रित कर उसी आधार पर औसत अनुमानित आंकड़े सम्पूर्ण क्षेत्र के लिये तैयार करता है। इसमें समानुपात या प्रतिशत में ही आंकड़े प्रस्तुत किये जाते हैं।

(2) द्वितीयक विधि :- जब कोई शोध कर्ता स्वयं सर्वेक्षण नहीं कर किसी प्रकाशित या अप्रकाशित आलेख से आंकड़े एकत्रित करता है तो उसे द्वितीयक आंकड़े कहे जाते हैं। इसके निम्नलिखित प्रमुख स्रोत हैं :-

(a) जनगणना प्रतिवेदन
(b) पत्र - पत्रिकाएँ
(c) प्रकाशित (बुक) पुस्तकें
(d) शोधार्थी, छात्र, या अन्य विभागों के उपलब्ध लिखित आलेख
(e) इंटरनेट एवं कम्प्यूटर
(f) अन्य समाचार माध्यम

इनमें इंटरनेट वर्तमान में सबसे अधिक प्रचलित संसाधन है जिससे बहुत आसानी से एवं काफी कम समय पर अतिशीघ्र कोई भी आँकड़े मिल जाते हैं।

(राम कुमार रवि)